❖ अमरावती, गुरुवार २५ सितंबर से १ अक्तूबर २०२५ ❖ वर्ष १५ ❖ अंक १८ मूल्य १०/- पृष्ठ ८ ❖पोस्टल रजि. नं. ATI/RNP/268/2025-2027 डाक : शुक्रवार - शनिवार

RNI NO. MAHHIN / 2010 /43881

विदर्भ स्वाभिमान

संपादक : सुभाषचंद्र जे. दुबे | प्रबंधक : सौ. वीणा एस. दुबे

नवरात्री विशेषांक

E-Mail-vidarbh.swabhiman@gmail.com

बाबूजी के आदर्श

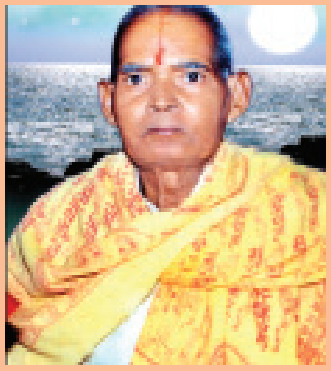

जीवन में महिलाओं के हर रूप अनुपम होते हैं. यह ऐसी लक्ष्मी होती हैं जो घर को स्वर्ग बनाती है. महिलाओं का सदा सम्मान करना चाहिए. जहां महिलाओं का सम्मान होता है, समस्त देवताओं का निवास वही होता है.

महाकाली मंदिर बनेगा धार्मिक क्षेत्र में अंबानगरी की शान

विदर्भ में दक्षिणी स्थापत्यकला का पहला मंदिर,शतचंडी यज्ञ २१ से

मंदिर जीर्णोद्धार, ९ माताओं की मूर्ति स्थापना,४ को महाप्रसाद

विदर्भ में दक्षिणी स्थापत्यकला का पहला मंदिर, ४ अक्तूबर को भव्य महाप्रसाद, जारी है शतचंडी महायज्ञ

अमरावती–अंबानगरी को धार्मिक नगरी कहा जाता है, इस नगरी का अध्यात्मिक इतिहास और कई प्राचीन मंदिर भी यहां हैं. इस कड़ी में नई उपलब्धि सबनीस प्लॉट में गोल्डन टेंपल महाकाली माता मंदिर के रूप में जुड़ गई है. विदर्भ में पहली बार दक्षिणी स्थापत्य कला के आकर्षक नमूने के साथ सबनीस प्लॉट में महाकाली माता मंदिर शहर के अध्यात्मिक शहर की शान है. यह मंदिर जहां जागृत मंदिर है, वहीं मां कालिका देवी देवस्थान द्वारा किए गए प्रयास से शहर की धार्मिक विरासत को अपार कामयाबी मिली है. मंदिर को गोल्डन टेंपल की तर्ज पर विकसित किया गया है, मंदिर के जीर्णोद्धार, कलशारोहण के साथ यहां शतचंडी महायज्ञ शुरु है, इसमें बड़ी संख्या में भक्त शामिल हो रहे हैं. साथ ही रोज बड़ी संख्या में भक्त मां महाकाली का दर्शन कर धन्य हो रहे हैं. इसका पुण्यलाभ लेने का सौभाग्य शहर के साथ ही विदर्भवासियों को मिला है.मंदिर न केवल शहर बल्कि समूचे विदर्भ में महाकाली माता भक्तों के लिए शानदार स्थल साबित होने का विश्वास संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष अजय मोरय्या, जयश्री मोरय्या ने जताया है. मंदिर को आकर्षक ढंग से सजाया गया है, जो भक्तों को आकर्षित कर रहा है.

मंदिर में महाकाली माता के अलावा चारदीवारी को भी दक्षिणी स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना बनाया गया है. पहली ही नजर में देखने पर यह मंदिर भक्तों को आकर्षित करता है. यहां आयोजित कार्यक्रम भव्य पैमाने पर होने वाला है. मंदिर का निर्माण देवस्थान के प्रमुख अजय मोरय्या,जयश्री मोरय्या तथा सहयोगियों की देख-रेख में किया जा रहा है. सवा पांच फुट के प्रमुख कलश के साथ ही मंदिर परिसर में कुल ५१ कलश की स्थापना की गई है. मंदिर के लिए धर्मध्वज, माताओं की मूर्तियां तथा अन्य सामग्री राजस्थान के जयपुर शहर से लाई गई है. छोटे से मंदिर से लेकर

मंदिर का भव्य रूप महाकाली माता भक्तों के लिए सौगात है, यह सौगात मोरय्या दम्पति द्वारा नवरात्रि के पावन पर्व पर शहरवासियों को

दे ने

को लेकर सभी में अपार हर्ष व्याप्त है. क्षेत्र का जागृत मंदिर जानकारी देते हुए अजय मोरय्या,जयश्री मोरय्या ने बताया कि पहले मां काली का यहां छोटा सा मंदिर था. मंदिर जागृत रहने से बड़ी संख्या में क्षेत्र के साथ ही अन्य भक्तों का आना-जाना शुरू हुआ. मंदिर के कारण हजारों भक्तों को जीवन में व्यापक बदलाव आया और जागृत मंदिर बना. मान्यता है कि इस मंदिर में बहुत शक्तिशाली आध्यात्मिक ऊर्जा है, इसका अनुभव बड़ी संख्या में भक्तों ने किया है. शहर ही नहीं तो संभवत: विदर्भ में दक्षिणी स्थापत्य कला तथा जागृत मंदिर के रूप में यह पहला मंदिर है. मंदिर की शक्तिशाली अध्यात्मिक उर्जा का अनुभव सच्चे दिल से महाकाली को पूजने वाले भक्तों को मंदिर के करीब से गुजरने पर भी होती है. विदर्भ क्षेत्र के इस महाकाली मंदिर का संबंध दक्षिणी स्थापत्य कला से रहने के कारण यह क्षेत्रवासियों ही नहीं तो भक्तों के आकर्षण का केन्द्र बना है.

नवरात्रि में उमड़ रहे हैं भक्त

सबनीस प्लाट स्थित और विदर्भ में अपनी तरह के पहले महाकाली माता मंदिर की आकषर्कता जहां भक्तों को प्रभावित कर रही है वहीं दूसरी ओर नवरात्रि में यहां दर्शन के लिए बड़ी संख्या में महिलाएं एवं भक्त पहुंच रहे हैं. मोरय्या दंपति सभी भक्तों का स्वागत कर रहा है और माता रानी का दर्शन कर अपना जीवन धन्य करने का आग्रह कर रहा है. आगामी दिनों में यह मंदिर भी अंबा नगरी की धार्मिक शान में चार चांद लगाने का कार्य निश्चित तौर पर करने वाला है.

मंदिर जीर्णोद्धार के उपलक्ष्य में

शतचंडी महायज्ञ

लक्ष्मी बरकत पीटली

- सहस्त्रार्चन, कुंकू मार्चनम् पूजन-

माँ कालीका माता का विशेष सहस्त्रार्चन पूजन (प्रतिदिन)

प.पु.श्री शक्ती पीठाधीश्वर

श्री. १००८ श्री शक्तीजी महाराज के हस्ते

मंगलवार, दि.30 सितंबर 2025 समय - दोपहर 3 बजे से 6 बजे तक

संपादकीय .....

नारी शक्ति की आराधना का प्रतीक पर्व

भारतीय संस्कृति और संस्कारों में शक्ति के प्रतीक के रूप में महिलाओं का उल्लेख किया गया है. वह जितनी कोमल होती है, ममतामयी होती है लेकिन उसकी आन बान और शान के साथ अगर उस पर अथवा उसके परिवार पर किसी तरह का संकट आता है तो वह महाशक्तिशाली राक्षसों का विनाश करने वाली मां दुर्गा भी बन जाती है. नवरात्रि का पर्व केवल एक उत्सव नहीं है बल्कि इस बात का प्रतीक है कि महिलाओं की ताकत तो सीमित होती है और सदा उन्हें सम्मान देना चाहिए.

विदर्भ की कुलस्वामी मां अंबा तथा एकवीरा देवी, महाकाली माता मंदिर, चांदूर रेलवे रोड पर स्थित वाघामाता मंदिर और इसी मार्ग पर स्थित मां वैष्णो देवी मंदिर के साथ शहर की अन्य क्षेत्रों में स्थित अन्य छोटे से बड़े मां दुर्गा के मंदिरों में दर्शन के लिए जहां लोगों की भीड़ बढ़ती है वहीं दूसरी ओर नवरात्रि का यह पर्व खुशी और चैतन्य का प्रतीक होता है. मां दुर्गा की पूजा का यह पर्व जहां महिलाओं के प्रति सदा सम्मान रखने का संदेश देता है वहीं यह पर्व वर्तमान दौर में यह बताने के लिए भी काफी है कि आज महिलाएं किसी भी क्षेत्र में कम नहीं है. ऑटो से लेकर ट्रक तक और विमान का बेहतरीन संचालन महिलाएं कर रही हैं. ऐसे में महिलाओं के कारण ही घर में खुशी होती है.नवरात्रि का पर्व महिलाओं को समर्पित है. बदलते दौर में आज जब पति द्वारा मोबाइल छीन लेने पर कोई महिला अपने बच्चों की हत्या करने पर उतारू हो जाती है तो ऐसे समय कुछ सवाल ऐसे समय कुछ सवाल महिलाओं को लेकर निश्चित पैदा होते हैं. महिलाओं की समझदारी से घर स्वर्ग बनता है लेकिन अगर अहंकार इन पर हावी हो जाए तो घर बर्बाद होने में भी समय नहीं लगता. नवरात्रि का पर्व जहां महिलाओं की महत्ता बताने के लिए काफी है वही इस पर्व में हर महिला को यह प्रयास करना चाहिए कि वह घर की भी लक्ष्मी बने और घर की खुशियों का कारण बने. सास ससुर में किसी तरह का भेदभाव किए बिना वह दो परिवारों को खुश रखना का अगर समर्पित प्रयास करती है तो निश्चित तौर पर माता रानी के विभिन्न रूपों में वह स्वयं के साथ परिवार की सबसे बड़ी ताकत बनती है.नवरात्रि केवल धार्मिक उत्सव ही नहीं, बल्कि नारी शक्ति के सम्मान और महिमा का पर्व है.इस उत्सव में माँ दुर्गा के नौ स्वरूपों की उपासना की जाती है, जो नारी के विभिन्न रूपों का प्रतीक हैं–ममता, करुणा, त्याग, शक्ति, ज्ञान, धैर्य और न्याय.नवरात्रि यह दर्शाती है कि जब अन्याय और अधर्म बढ़ता है, तब नारी रूपी शक्ति ही उसका संहार करती है.

स्त्रियों की पूजा कन्या पूजन के रूप में की जाती है, जिससे यह संदेश जाता है कि समाज में नारी का सम्मान सर्वोपरि है.नवरात्रि समाज को याद दिलाती है कि महिलाओं के बिना कोई भी परिवार, समाज या संस्कृति पूर्ण नहीं है.

नारी ही जीवनदाता है, संस्कारों की जननी है और घर–परिवार की आधारशिला है.

नवरात्रि हमें यह प्रेरणा देती है कि हमें नारी का आदर करना चाहिए, उसकी क्षमता को पहचानना चाहिए और उसे उचित सम्मान व समान अधिकार देने चाहिए.नवरात्रि केवल देवी दुर्गा की आराधना नहीं है, बल्कि यह नारी शक्ति को प्रणाम करने और उसके महत्व को स्वीकार करने का सांस्कृतिक व आध्यात्मिक संदेश भी यह पर्व देता है. मतदार राज की ओर से नवरात्रि के पावन पर्व पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं.

महिलाओं का सदा सम्मान करें

सुदर्शन गांग
९४२२१५६५२३

महिलाओं का सदा सम्मान करना केवल हमारी संस्कृति की शिक्षा ही नहीं, बल्कि मानवता का मूल धर्म भी है.महिलाएँ जीवनदायिनी, त्याग और प्रेम की प्रतिमूर्ति होती हैं। वे बेटी, बहन, पत्नी, माँ और गुरु हर रूप में समाज को आगे बढ़ाने में योगदान देती है.जहाँ महिलाओं का सम्मान होता है, वहाँ समृद्धि और सुख अपने आप आते हैं.केवल हमारी संस्कृति की शिक्षा ही नहीं, बल्कि मानवता का मूल धर्म भी है. प्रकृति की यह अनुपम रचना स्वयं को हर स्थिति में उसके काबिल बना देती है, अपनी औलाद की रक्षा के लिए जहां वह मां दुर्गा बन जाती है वहीं दूसरी ओर घर में सभी सदस्यों के लिए उसकी अलग–अलग भूमिकाओं में भी वह सदा अहम भूमिका निभाती हैं.महिलाएँ जीवनदायिनी, त्याग और प्रेम की प्रतिमूर्ति होती हैं. वे बेटी, बहन, पत्नी, माँ और गुरु हर रूप में समाज को आगे बढ़ाती हैं.

उनके अधिकारों को मान्यता देना,

उनकी स्वतंत्रता की कद्र करना,उनके विचारों और भावनाओं को महत्व देना और उन्हें समान अवसर प्रदान करना.

जहाँ महिलाओं का सम्मान होता है, वहाँ समृद्धि और सुख अपने आप आते हैं. हमारे शास्त्रों में यहां तक कहा गया है जहां महिला का सम्मान होता है समस्त देवताओं का निवास वही होता है. समय के साथ कुछ स्थितियां बदली है लेकिन यह भी इतना ही है कि घर की शोभा महिलाओं से ही बढ़ती है. किसी घर में वह खुशियों का सबसे बड़ी मध्य होती हैं. मां के रूप में, बहन के रूप में, बेटी अथवा बहू के रूप में उनके हर रूप निराले होते हैं और सभी रूपों में परिवार के प्रति प्रेम, अपनापन, बच्चों तथा परिवार की सुरक्षा के लिए वह जहां सबसे बड़ी ताकत बन जाती है वहीं दूसरी ओर आज महिलाओं ने हर क्षेत्र में अपनी मेहनत लगन और समर्पण के कारण कामयाबी का इतिहास दर्ज किया है. अमरावती जिला तो महिलाओं के लिए सबसे बेहतरीन जिला है और हमारे ही शहर की प्रतिभाताई पाटील ने जहां राष्ट्रपति बनकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जिले का नाम चमकाया है वहीं पूर्व सांसद और भाजपा नेत्री नवनीत राणा सहित जिले की सभी महिला नेत्रियां भी आज अपने क्षेत्र में लगातार शहर तथा जिले का नाम रोशन कर रही हैं. आदिशक्ति की आराधना के पावन पर्व सभी को हार्दिक शुभकामनाएं.

माता के जयकारे की गूंज

अमरावती– अकोली रोड के पुरूषोत्तम नगर में सार्वजनिक महिला नवदुर्गोत्सव मंडल द्वारा २५ वर्षों से मां दुर्गा की आराधना की जा रही है. बुधवार को दोपहर की आरती का नजारा,आरती में शामिल क्षेत्रवासी. महिलाओं में अपार भक्तिभाव तथा सेवाभाव के कारण मंडल लगातार आगे बढ़ रहा है. इनके महाप्रसाद का लाभ हजारों भक्त उठाते हैं.

हिन्दी साप्ताहिक विदर्भ स्वाभिमान यह पत्र मालिक, प्रकाशक, सम्पादक-सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे ने एस.बी. प्रिन्टर्स, गांधी चौक,जिला अमरावती (महाराष्ट्र)से मुद्रित कर प्रकाशित किया है. मुद्रक-श्री संदीप बागडे,एस.बी. प्रिन्टर्स, गांधी चौक,अमरावती.जिला अमरावती (महाराष्ट्र).प्रकाशन स्थल-साप्ताहिक विदर्भ स्वाभिमान, छाया कॉलोनी,अकोली रोड,अमरावती. (महाराष्ट्र) मुख्य सम्पादक-सुभाषचंद्र जे.दुबे (पी.आर.बी.कानून के अनुसार सर्वस्वी जवाबदार).मुख्य प्रबंधक- वीणा दुबे,(सभी विवाद अमरावती न्यायालय अंतर्गत)आर.एन.आई.रजिस्ट्रेशन नंबर MAHHIN/2010/43881
मोबाइल नं.-*09423426199,8855019189/8208407139*
E-Mail-vidarbh.swabhiman@gmail.com | www.vidarbhswabhiman

महाकाली माता मंदिर को पंडित प्रदीप मिश्रा का मिला आशिर्वाद

जिले ही नहीं विदर्भ की शान है महाकाली माता मंदिर दक्षिणी राज्य की स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना, संस्थापक अध्यक्ष अजय-जयश्री मोरय्या को दिया आशीर्वाद

अमरावती- शहर के आध्यात्मिक इतिहास में मील का पत्थर साबित होने वाले सबनीश प्लाट स्थित और मां कालिका देवी संस्थान के गोल्डन टेंपल के रूप में विकसित हो रहे और लोगों की आकर्षण का केंद्र बने महाकाली माता मंदिर के जीर्णोद्धार के उपलक्ष्य में आयोजित शतचंडी महायज्ञ को अंतर्राष्ट्रीय कथा प्रवक्ता पंडित प्रदीप मिश्रा ने आशीर्वाद दिया है.

संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष अजय मोरय्या एवं साथियों ने सीहोर पहुंचकर पं. प्रदीप मिश्रा से मुलाकात कर उन्हें अमरावती ही नहीं बल्कि विदर्भ की शान बनने वाले महाकाली माता मंदिर के बारे में पूरी जानकारी दी. साथ यह भी बताया कि किस तरह से यह क्षेत्र जागृत क्षेत्र के रूप में है और महाकाली माता की कृपा से न जाने कितने भक्तों को इस मंदिर का अनुभव हुआ है. पंडित प्रदीप मिश्रा ने कहा कि अमरावती धार्मिक नगरी है, अंबा देवी एकवीरा देवी के रूप में जहां माता के भक्तों की संख्या लाखों में है वहीं दूसरी ओर शिवालयों के मामले में भी अमरावती शहर तथा जिला अग्रणी है. २२ से ३० सितंबर तक नवरात्रि उत्सव के साथ अमरावती तथा समूचे विदर्भ के भक्तों को मां महाकाली के दर्शन का पुण्य लाभ प्राप्त होगा. पंडित प्रदीप मिश्रा का आशीर्वाद मिलने के बाद महाकाली माता के भक्तों में अपार उत्साह व्याप्त है और इस कार्यक्रम को अभूतपूर्व बनाने में अजय मोरय्या, जयश्री मोरय्या, पंडितजी क्षेत्रवासियों सहित सभी माता भक्त प्रयास कर रहे हैं.

विदर्भ में अपनी तरह की सबनीस प्लाट स्थित महाकाली माता मंदिर को पंडित जी का आशीर्वाद मिलने के बाद निश्चित तौर पर मंदिर के लोकप्रियता के साथ शहर ही नहीं तो आसपास के क्षेत्र से भी लोग यहां पहुंच रहे हैं और इस मंदिर की भव्यता को देखकर गदगद हो रहे हैं.

नवरात्रि महोत्सव के दौरान कई संतों के दर्शन का सौभाग्य भी भक्तों को मिलने वाला है. इनमें महाकाली माता मंदिर के पीठाधीश्वर शक्ति महाराज, देवनाथ महाराज मठ के प्रमुख जीतेंद्र नाथ महाराज, शिवधारा के डॉ. संतोष देव महाराज सहित अन्य कई संतों के दर्शन का लाभ भक्तों को हो रहा है.

भारतीय संस्कृति है असीमित खुशियों का पिटारा

भारतीय संस्कृति में हर पर्व का अपना महत्व होता है. यह न केवल खुशियां बनता है बल्कि बाजार से लेकर घर में रौनक पहुंचाने का कार्य करता है. नवरात्रि उत्सव जहां खुशियों का पर्व है, आदिशक्ति की आराधना का पर्व है वहीं दूसरी ओर यह पर व्यवसाय के लिहाज से भी बेहतरीन पर्व माना जाता है. भारत के सर्वोच्च व्यापारिक संगठन द्वारा इस बात को स्वीकार किया गया है और नवरात्रि उत्सव के दौरान देश में लगभग ५०००० करोड रुपए का व्यवसाय होने और बाजार में भी रौनक आने की जानकारी दी गई है. नवरात्रि का पर्व जहां महिलाओं के सम्मान की सीख देता है वहीं दूसरी ओर यह पर्व यह भी सिखाता है कि महिलाएं शक्ति की प्रतीक होती हैं और उनकी क्षमता को जानते हुए सदा उनका सम्मान करें और घर की खुशियां भी उनके ही कारण रहती हैं ऐसे में पर्व के दौरान अपनी किसी एक बुरी आदत को छोड़ने का संकल्प लेना चाहिए.हमारे जीवन में पर्व केवल धार्मिक आस्था से जुड़े नहीं होते, बल्कि ये समाज और परिवार को जोड़ने वाले सेतु भी हैं. जब-जब कोई पर्व आता है, तब-तब लोगों के चेहरे पर मुस्कान, घर-घर में रौनक और दिलों में उत्साह अपने आप उमड़ पड़ता है। नवरात्रि का पर्व भी लोगों को जोड़ने का कार्य करता है. गरबा तथा अन्य आयोजनों से लोगों को एक-दूसरे से जोड़ते हैं और मेलजोल का अवसर देते हैं.

सुधीर महाजन
प्राचार्य
पोदार इंटरनेशनल स्कूल, इंदौर

परिवार और समाज में प्रेम, भाईचारे और एकता की भावना को मजबूत करते हैं.रोज़मर्रा की थकान और व्यस्तता से हटाकर नए उत्साह और ऊर्जा से भर देते हैं. सबको मनोरंजन और आनंद का अवसर प्रदान करते हैं.साथ ही ये हमारी संस्कृति और परंपराओं को जीवित रखने का माध्यम भी हैं.पर्व आते हैं तो खुशियाँ अपने आप जीवन में रंग बिखेर देती हैं. नवरात्री पर सभी देशवासियों को शुभकामनाएं देते हुए मैं मां के चरणो में कामना करता हूं कि सभी का जीवन खुशहाल रहे.

सुख, समृद्धि आनंद देने वाली है यह नवरात्रि

अमरावती- आमतौर पर लोगों को पता है कि मां दुर्गा का वाहन सिंह है लेकिन बहुत कम लोगों को पता है कि मां के आगमन का वहां अलग रहता है और उनके विदाई का वाहन अलग रहता है. वह जिस वहां से आती हैं, उससे आने वाली स्थिति के संकेत मिलते हैं. इस बार मां का आगमन सफेद गज पर हो रहा है, यह जहां सुख समृद्धि का कारक माना जाता है वहीं इस बार की नवरात्रि कई लोगों के जीवन में उत्साह पूर्ण बदलाव लाने वाली है इसका संकेत मिलने वाला है. नौ दिनों तक मां की आराधना समर्पित भाव से करने पर मां की कृपा से उनके भक्तों का जीवन जहां खुशियों से भर जाता है वहीं दूसरी ओर मां दुर्गा की कृपा होने पर कम मेहनत में भी आप शानदार कामयाबी हासिल कर सकते हैं. सुख-समृद्धि का दायक है शारदीय नवरात्रि उत्सव. इस दौरान भक्तों की सभी मनोकामनाओं को मां पूरा करेंगी और खुशियों के साथ समृद्धि भी लाएंगी.

शारदीय नवरात्रि को शक्ति उपासना का महान पर्व माना जाता है.इस बार माता दुर्गा सफेद हाथी पर सवार होकर पृथ्वी लोक पर पधारेंगी, जो अत्यंत शुभ और मंगलकारी संकेत माना जाता है. सफेद हाथी पर आगमन का अर्थ है कि इस बार नवरात्रि सुख-समृद्धि, शांति और प्रगति लेकर आएगी. धार्मिक मान्यता है कि जब माँ दुर्गा हाथी पर सवार होकर आती हैं तो वर्षा, अन्न-वृद्धि, जल-समृद्धि और प्रजा के कल्याण के संकेत मिलते हैं. इस अवसर पर नौ दिनों तक माँ दुर्गा के नौ स्वरूपों की आराधना की जाती है और भक्तगण शक्ति, स्वास्थ्य, वैभव और आध्यात्मिक उन्नति की कामना करते हैं. नवरात्रि का यह पावन पर्व हमें यह प्रेरणा देता है कि हम अपने जीवन से आलस्य, नकारात्मकता और बुराई को हटाकर शक्ति, साहस और सद्गुणों को अपनाएं.

अपनी क्षमता को पहचानने का पर्व–कीर्ति चिंतामणि

विदर्भ स्वाभिमान,२४ सितंबर

अमरावती– महिलाओं में अपार क्षमता होती है. नवरात्रि का पर्व उन्हें अपनी शक्ति का एहसास कराता है. आज हर क्षेत्र में महिलाओं ने स्वयं को साबित किया है. वे वे जहां लक्ष्मी बन सकती हैं, वहीं दूसरी ओर अन्याय बढ़ने पर महाकाली का भी रूप ले सकती हैं. हर महिला में कुछ ना कुछ विशेष गुण होता है इसका ही प्रयोग हुए किस तरह करती हैं यही उनके जीवन की दिशा तय करता है. इस आशय का मत अमरावती सेंट्रल जेल की जेल अधीक्षक कीर्ति चिंतामणि ने व्यक्त की. नवरात्रि पर सभी महिलाओं को शुभकामनाएं देते हुए उन्होंने कहा कि महिलाओं में एक दूसरे को समझने की प्रवृत्ति बढ़ाना जरूरी है. यह बढ़ाने पर कई समस्याओं का समाधान स्वयं हो जाएगा.अंबा नगरी का धार्मिक महत्व है. मां अंबा तथा एकवीरा यहां विराजित है जिनके दर्शन करने के लिए हजारों की संख्या में देशभर से भक्त आते हैं. नवरात्रि उत्सव केवल एक उत्सव नहीं बल्कि शक्ति का प्रतीक पर्व है.

महिलाएं स्वयं को पहचानें– ज्योति औगड

महिलाओं में अपार क्षमता होती है. उन्हें स्वयं को पहचानना होगा और जो कला उनमें है, उसमें पारंगत बनते हुए आर्थिक रूप से सक्षम बनने की दिशा में प्रयास करना चाहिए. महिलाएं जब स्वयं की शक्ति समझ जाएगी तब उनमें इतना कुछ करने की शक्ति आ जाएगी की किसी की मजाल उन्हें आंख दिखाने के नहीं रहेगी. राजनीति में समर्पित महिलाओं को मौका देने का प्रयास सभी महिलाओं को करना इस आशा का मत शिवसेना उबाठा की महिला जिला अध्यक्ष ज्योति औगड़ ने किया.महिलाओं के यह गुण और खूबियां जब तक वह नहीं समझ पाती हैं तब तक उन्हें दिक्कतों का सामना करना पड़ता है. महिलाएं स्वयं को समझें और आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए जी जान से प्रयास करें.

आर्थिक मजबूती देती है ताकत– सुधा तिवारी

नवरात्रि महिला शक्ति का पर्व है और इस दौरान हर महिला को अपनी शक्ति समझते हुए आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनने का प्रयास करना चाहिए. महिलाएं जब आर्थिक रूप से मजबूत होती हैं तो घर की प्रगति होती है.छोटी–मोटी जरूरत के लिए महिलाओं को एकता के साथ प्रयास करना चाहिए. राज्य तथा केंद्र सरकार द्वारा महिलाओं के कल्याण के लिए कई योजनाएं चलाई जा रही है.

समय की आवश्यकता है महिलाएं राष्ट्रीय निर्माण में सहयोगी बनें

नवरात्रि पर्व पर संभागीय आयुक्त श्वेता सिंघल ने दी शुभकामनाएं

विदर्भ स्वाभिमान,२४ सितंबर

अमरावती–समस्त महिलाओं को शक्ति का प्रतीक माना जाता है. अपार क्षमता होती है. परिवार को संवारने से लेकर समाज तथा राष्ट्र को दिशा देने की ताकत भी सृजनशीलता की ताकत रखने वाली महिलाओं में होता है. इसके लिए केवल सही दिशा और प्राप्त होने वाले सुअवसरों का उपयोग वे किस तरह करती हैं इस पर ही बहुत कुछ निर्भर करता है. नवरात्रि का पर्व महिलाओं के महत्व के साथ यह संदेश भी देता है कि बिना महिलाओं के परिवार और सब कुछ सुना रहता है. महिलाओं को राष्ट्र के निर्माण में सहयोगी बनने की भूमिका निभानी चाहिए. इस आशय का प्रतिपादन संभागीय आयुक्त श्वेता सिंघल ने किया. उन्होंने सभी को नवरात्रि उत्सव की मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए सभी के जीवन में सुख–शांति समृद्धि, स्वास्थ्य और खुशहाली की कामना की. विदर्भ स्वाभिमान के साथ बातचीत करते हुए उन्होंने कहा कि सर्वगुण संपन्न रहने के साथ सभी प्रकार से नेतृत्व क्षमता महिलाओं में होती है.महिला शक्ति का महत्व मानव समाज के हर पहलू में है. इतिहास गवाह है कि जब–जब महिलाओं ने अपनी क्षमताओं को पहचाना है, तब–तब समाज में नई दिशा और ऊर्जा का संचार हुआ है.महिलाओं के भीतर अपार धैर्य, करुणा, संवेदना और त्याग की शक्ति होती है. वही शक्ति जब आत्मविश्वास और संकल्प के साथ जुड़ती है, तो महिलाएं किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से पीछे नहीं रहतीं. चाहे शिक्षा हो, राजनीति, विज्ञान, साहित्य या खेल – महिलाएं हर जगह अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रही हैं.अक्सर सामाजिक बंधन, परंपराएं और डर उन्हें उनकी असली ताकत पहचानने से रोकते हैं. यदि महिलाएं खुद पर विश्वास करें, अपने अधिकारों को जानें और अपने सपनों को पूरा करने का साहस दिखाएं, तो वे समाज में बदलाव की सबसे बड़ी वाहक बन सकती हैं.आज जरूरत है कि महिलाएं खुद को सीमाओं में न बांधें बल्कि अपने आत्मविश्वास और योग्यता से नई पहचान बनाएं. जो शक्ति उन्होंने सृष्टि को जन्म देने में दिखाई है, वही शक्ति उनके जीवन को और समाज को नई ऊंचाइयों तक ले जा सकती है. महिलाएं अपनी ताकत पहचानें – क्योंकि आपकी शक्ति ही आपके परिवार, समाज और राष्ट्र की असली शक्ति है.

जीवन का सबसे बड़ा धन है आदर्श संस्कार

समाजसेवी कमलकिशोर मालानी का प्रतिपादन

विदर्भ स्वाभिमान, २४ सितंबर

अमरावती – शहर के साथ पूरे देश में नवरात्रि उत्सव का पर्व भव्य बनाने पर मनाया जा रहा है. इस उपलक्ष में सभी देशवासियों विशेष रूप से शक्ति की प्रतीक सभी महिलाओं को डॉन हार्दिक शुभकामनाएं. सभी का जीवन खुशहाल हो, स्वस्थ हो और माता रानी सभी की मनोकामनाएं पूरी करें, इन शब्दों में समाजसेवी रवि नगर निवासी कमल किशोर मालानी ने नवरात्रि की शुभकामनाएं दी हैं. उनके मुताबिक धर्म से संस्कार और संस्कार से आदर्श आचरण तैयार होता है. इसलिए जीवन में बच्चों को सबसे पहले आदर्श संस्कार देने का प्रयास करना चाहिए.

राष्ट्र धर्म और संस्कारों को बढ़ावा देने वाले राष्ट्रीय लोकप्रिय हिंदी साप्ताहिक विदर्भ स्वाभिमान के साथ बातचीत करते हुए कमल किशोर मालानी ने अध्यात्म संस्कार और महिला शक्ति पर बेहतरीन तरीके से विचार व्यक्त किया.

संस्कार और धार्मिकता का संबंध

संस्कार हमारे जीवन की वह धरोहर हैं, जो बचपन से परिवार और समाज हमें देते हैं. ये संस्कार ही हमें सही और गलत का ज्ञान कराते हैं. जब व्यक्ति अच्छे संस्कारों को आत्मसात करता है तो उसमें धार्मिकता स्वतः ही बढ़ती है.संस्कार व्यक्ति के मन में ईश्वर और धर्म के प्रति आस्था जगाते हैं.सत्य, अहिंसा, करुणा और परोपकार जैसे मूल्य धार्मिकता को मजबूत करते हैं.युवा स्वाभिमान पार्टी के राष्ट्रीय पदाधिकारी कमल किशोर मालाणी के मुताबिक अच्छे संस्कारों से व्यक्ति पाप–पुण्य का भेद समझता है और धर्मसम्मत कार्य करता है.संस्कारित व्यक्ति धार्मिक उत्सवों और परंपराओं से जुड़कर समाज में सौहार्द बनाए रखता है. संस्कार व्यक्ति को आत्मज्ञान और भक्ति की ओर प्रेरित करते हैं.संस्कार ही मनुष्य का वास्तविक धन है, जो उसके जीवन को धर्म, आस्था और सद्गुणों से भर देता है।

शक्ति की आराधना का पर्व है नवरात्र उत्सव

भारतीय संस्कृति और संस्कार महान है. यही कारण है कि भारत में खुशियों का माध्यम ही हमारे पर्व नहीं होते हैं बल्कि आर्थिक विकास में भी विभिन्न त्योहार महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. शारदीय नवरात्रि उत्सव २२ सितंबर से आरंभ हो रहा है. यह न केवल मां दुर्गा की आराधना का पर्व है बल्कि यह पर्व शक्ति का प्रतीक मां की आराधना के साथ ही जीवन में मर्यादा पूर्ण जीवन जी कर हम किस तरह परिवार समाज और राष्ट्र का भला कर सकते हैं इसकी बेहतरीन सीख यह पर्व देता है. नौ दिनों तक मां की आराधना के अलावा मानवता का दीप जलाने के लिए हमें कोशिश करना चाहिए कि समाज में जो लोग गरीब हैं, जरूरतमंद है ऐसी बच्चियों की शिक्षा में योगदान देकर उन्हें भी माता रानी का रूप मानते हुए जीवन में आर्थिक रूप से मजबूत बनाने में योगदान देना चाहिए.

उत्सव ही नहीं जोड़ता है नवरात्रि उत्सव

शारदीय नवरात्रि हिंदू धर्म का एक प्रमुख और पावन पर्व है, जो अश्विन मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नवमी तक नौ दिनों तक मनाया जाता है. यह पर्व माँ दुर्गा और उनके नौ स्वरूपों की उपासना के लिए समर्पित है.

आध्यात्मिक महत्व – नवरात्रि के दिनों में साधक देवी दुर्गा की आराधना, उपवास, जप और साधना के माध्यम से आत्मबल, धैर्य और शक्ति प्राप्त करते हैं। इसे आत्मशुद्धि और आध्यात्मिक उन्नति का श्रेष्ठ समय माना जाता है.

नवरात्रि का अत्यधिक धार्मिक महत्व है.पुराणों के अनुसार माँ दुर्गा ने महिषासुर नामक असुर का वध कर धर्म और सत्य की रक्षा की थी.नवरात्रि इसी विजय का प्रतीक है.अतः यह पर्व सत्य की असत्य पर विजय और धर्म की अधर्म पर जीत का संदेश देता है. नवरात्रि उत्सव का जबरदस्त सांस्कृतिक महत्व है. नवरात्रि के अवसर पर देशभर में गरबा, डांडिया, रामलीला और दुर्गा पंडाल जैसे विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं. यह पर्व सामाजिक एकता और उत्साह का प्रतीक है.

नवरात्रि उत्सव तपस्या का पर्व है. सांसारिक प्रपंच में रहकर भी ९ दिनों तक आप घर में ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए मां की आराधना कर सकते हैं और संभव हो तो उपवास करना चाहिए अगर स्वास्थ्य साथ नहीं दे रहा है तो इन नौ दिनों में मां की आराधना के साथ भजन तथा अन्य कार्यक्रमों का लाभ दिया जा सकता है. यह पर्व स्वास्थ्य और अनुशासन का महत्व – इन दिनों उपवास और सात्विक आहार से शरीर का शुद्धिकरण होता है. ऋतु परिवर्तन के समय यह आहार शरीर को स्वस्थ रखने में सहायक माना जाता है.

नवरात्रों उत्सव केवल पर्व नहीं बल्कि देश भर में लाखों लोगों को रोजगार देने का मजबूत माध्यम भी बनता मूर्तिकारों से लेकर माता के हार बनाने, साफ सफाई से लेकर अन्य छोटी-मोटी दुकानों के माध्यम से हजारों लोगों को रोजगार भी मिलता है.आर्थिक और सामाजिक महत्व नवरात्रि में देवी मंदिरों और पंडालों में भव्य सजावट होती है, मेलों और बाजारों में रौनक रहती है. यह पर्व व्यापार, रोजगार और आर्थिक गतिविधियों को भी प्रोत्साहन देता है. कुल मिलाकर, शारदीय नवरात्रि श्रद्धा, भक्ति, साधना और शक्ति की उपासना का पर्व है, जो जीवन में सकारात्मक ऊर्जा, धर्म और संस्कृति का संचार करता है.

शक्ति आराधना का पर्व है नवरात्रि–शीतल ढोले

विदर्भ स्वाभिमान,२४ सितंबर

अमरावती–अंबा नगरी का धार्मिक महत्व है. मां अंबा तथा एकवीरा यहां विराजित है जिनके दर्शन करने के लिए हजारों की संख्या में देशभर से भक्त आते हैं. नवरात्रि उत्सव केवल एक उत्सव नहीं बल्कि शक्ति का प्रतीक पर्व है. यह जितना जिम्मेदारियां का पर्व है उतना ही कर्मठता और महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने का भी संदेश देता है. इन शब्दों में सहेली ब्यूटी पार्लर की संचालिका शीतल तोले ने नवरात्रि पर अपनी भावनाएं व्यक्त की.

महिलाएं स्वयं को जानें–वीणा दुबे

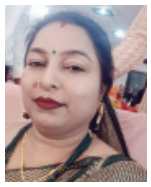

महिलाओं में अपार क्षमता होती है. उन्हें स्वयं को पहचानना होगा और जो कला उनमें है, उसमें पारंगत बनते हुए आर्थिक रूप से सक्षम बनने की दिशा में प्रयास करना चाहिए. महिलाएं जब स्वयं की शक्ति समझ जाएगी तब उनमें इतना कुछ करने की शक्ति आ जाएगी की किसी की मजाल उन्हें आंख दिखाने के नहीं रहेगी. महिलाओं के यह गुण और खूबियां जब तक वह नहीं समझ पाती हैं तब तक उन्हें दिक्कतों का सामना करना पड़ता है. महिलाएं स्वयं को समझें और अपनी विशेषताओं को अपनी ताकत बनाएं, इसके बाद वह स्वयं शक्ति बन जाएंगी.

आर्थिक रूप से मजबूत हों–भावना बनारसे

नवरात्रि महिला शक्ति का पर्व है और इस दौरान हर महिला को अपनी शक्ति समझते हुए आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनने का प्रयास करना चाहिए. घर की छोटी-मोटी जरूरत के लिए महिलाओं को एकता के साथ प्रयास करना चाहिए और अपनी समृद्धि के साथ मित्र महिलाओं को भी आर्थिक रूप से मजबूत बनाने का प्रयास करना चाहिए. इससे महिलाओं की कई समस्याएं हल हो जाएंगी.

धर्म से मिलता है संतोष–विद्या महाजन

जीवन में धर्म और संस्कारों का अत्यधिक महत्व होता है. संस्कारों की जननी महिलाएं होती हैं. नवरात्रि पर्व जहां महिलाओं की अपार शक्ति का परिचायक है वहीं दूसरी ओर परिवार से लेकर राष्ट्र की प्रगति में महिलाओं का सबसे बड़ा योगदान होता है. उनकी हर भूमिका सराहनीय होती है. महिलाएं जहां कोमल होती हैं वहीं समय पड़ने पर भी महाकाली जैसी कठोर भी बन जाती हैं. नवरात्रि पर हर महिला को अपनी ताकत समझते हुए आगे बढ़ने का और अन्य महिलाओं को भी आगे बढ़ाने में सहयोग देने का प्रयास करना चाहिए.

श्री कॉलोनी स्थित संत गजानन महाराज मंदिर भक्तों के आकर्षण का केन्द्र बना

भक्तों को आत्मिक आनंद की अनुभूति कराता है शहर के जुना बायपास रोड से मंगलधाम कॉलोनी की ओर जाने वाले श्री कॉलोनी में स्थित संत गजानन महाराज मंदिर जहां भक्तों का आकर्षण का केन्द्र बना है, वहीं इस मंदिर की अध्यात्मिक उर्जा का एहसास यहां आने वाला हर भक्त करता है। पिछले ४६ वर्षों से मंदिर में आने वाले भक्तों की संख्या बढ़ रही है। गुरुवार २५ सितंबर को सुबह–शाम की आरती के अलावा महाप्रसाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया है.

गजानन महाराज मंदिर के अध्यक्ष प्रदीप देशमुख ने बताया कि वर्ष १९७९ में छोटा सा यहां मंदिर था। धीरे–धीरे सभी के सहयोग से आज यहां पर भव्य मंदिर बना है।

सोमवार से बुधवार तक मंदिर का समय सुबह ६ से १२ बजे तक और शाम में ४ से ९ बजे तक तथा गुरुवार के दिन सुबह ६ से १२.३० बजे तथा दोपहर ४ से ९.३० बजे तक मंदिर भक्तों के लिए खुला रहता है। पुजारी के कुशल मार्गदर्शन में मंदिर में पूजा–अर्चना के साथ ही अन्य विभिन्न कार्यक्रम भी होते हैं। गुरूवार को दोपहर में महिलाओं का भजन कार्यक्रम होता है। अध्यात्मिक उर्जा का केन्द्र होने के साथ ही मंदिर में दर्शनार्थ पहुंचने वाले भक्तों को आत्मिक आनंद की अनुभूति होती है।

भक्तों का मिलता है साथ

मंदिर में होने वाले सभी कार्यक्रम अनुशासनबद्ध तरीके से होते हैं। आरती के निर्धारित समय का पालन किया जाता है। रात में ७ बजे की आरती में बड़ी संख्या में भक्त शामिल होते हैं। हर गुरुवार को रात्रि में ७ बजे होने वाली आरती में ३००–४०० भक्त सहभागी होते हैं। सभी के सहयोग से मंदिर का विकास हो रहा है।

प्रदीप देशमुख– अध्यक्ष, गजानन महाराज मंदिर, श्री कॉलोनी,अमरावती.

भजनों से सभी भावविभोर, ३० को संत दर्शन का मौका

मां कालिकादेवी संस्थान गोल्डन टेंपल सबनीस प्लॉट क्षेत्र स्थित मंदिर में जारी धार्मिक कार्यक्रमों में बड़ी संख्या में लाभ क्षेत्रवासी ले रहे हैं। शतचंडी यज्ञ में आचार्य शत्रुघ्न पांडे के मार्गदर्शन में विप्रबंधुओं द्वारा मंत्रोच्चार के साथ यज्ञ किया जा रहा है। मंगलवार को यहां पर सुख्यात गायक सुमित बावरा और राधा अग्रवाल के माता के जगराता कार्यक्रम का आयोजन किया गया था, इसे सुनने के लिए सैकड़ों की संख्या में माता भक्त यहां पहुंचे थे। मंदिर के अजय मोरय्या तथा जयश्री मोरय्या का मान्यवरों द्वारा जहां सत्कार किया गया, वहीं एक से बढ़कर एक भजन प्रस्तुत करते हुए दोनों ही गायकों ने भक्तों को बांधे रखा। गुरुवार २५ सितंबर को शाम ७ बजे यहां संगीतमय सुंदरकांड कार्यक्रम का आयोजन किया गया है।शनिवार २७ को शाम ७ बजे संगीतमय सामुहिक हनुमान चालीसा नवनीत राणा की प्रमुख मौजूदगी में होगा। पश्चात ३० को शीतला माता व कालभैरव मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा, कलश स्थापना तथा पूर्णाहुति होगी। इस समय राजराजेश्वर माऊली, जीतेन्द्रनाथ महाराज,पीठाधीश्वर शक्ति महाराज महानुभाव आश्रम के श्री कारंजेकर बाबा महाराज, मानस आश्रम पालोरा के मुन्नीलाल दुबे, संतसाईं राजेशलाल तथा डॉ.संतोषदेव महाराज के दर्शन का सौभाग्य भक्तों को मिलने वाला है.

मातामय हो गया है सबनीस प्लॉट

जागृत मंदिर को बेहतरीन बनाने, नवरात्रि उत्सव मनाने सहित सभी धार्मिक कार्यक्रमों के आयोजन के लिए अजय-जयश्री मोरय्या परिवार की जहां सराहना हो रही है, वहीं सभी कार्यक्रमों के लाभ का भाग्य क्षेत्रवासियों को मिल रहा है. मंगलवार को माता के जगराते में पूरा सभागृह माताभक्तों से भर गया था. इस समय मोरय्या दम्पति का सत्कार मान्यवरों की उपस्थिति में किया गया. सफलतार्थ संस्थान के सभी पदाधिकारी प्रयास कर रहे हैं.

सेवा भाव संवारता है जीवन-नेहा चौधरी

जीवन में धर्म और संस्कारों का अत्यधिक महत्व होता है. संकल्प सेवा संस्था के माध्यम से गरीब तथा जरूरतमंद बच्चों को खुशियां बांटने वाली समाजसेवी निर्भय चौधरी का कहना है कि स्वयं के साथ समस्त तथा राष्ट्र के विकास में भी महिलाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं.संस्कारों की जननी महिलाएं होती हैं. नवरात्रि पर्व जहां महिलाओं की अपार शक्ति का परिचायक है वहीं दूसरी ओर परिवार से लेकर राष्ट्र की प्रगति में महिलाओं का सबसे बड़ा योगदान होता है. अलमारी से मुस्कान अभियान चलाने वाली नेहा चौधरी का कार्य जिले में भी सराहनीय है.

भारत में मां दुर्गा के नौ रूपों का शारदीय नवरात्रिमें विशेष महत्व

अंबा नगरी ही नहीं बल्कि समूचे भारत में मां दुर्गा के नौ रूपों की पूजा शारदीय और चैत्र नवरात्रि में विशेष रूप से की जाती है. प्रत्येक रूप की अपनी विशिष्ट शक्ति और महत्व होता है. यहाँ नौ देवियों की ९ शक्तियाँ दी जा रही हैं. मां की इन शक्तियों का कुछ हिस्सा भी जिसके जीवन में आ जाए उसका जीवन निश्चित तौर पर तर जाता है. यह शक्तियां केवल महिलाओं नहीं बल्कि पुरुषों में भी वही चमत्कारी असर दिखा सकती हैं. पहले दिन से लेकर शैलपुत्री माता की आराधना से लेकर सिद्धिदात्री तक भक्तों की सभी मनोकामनाएं मां पूरी करती हैं. मां के चरणों में विदर्भ स्वाभिमान परिवार का कोटि-कोटि नमन और वंदन. यहां प्रस्तुत है मां की शक्तियां और उनकी आराधना करने से जीवन में आने वाले बदलाव का विवरण. जिनका सच्चा भाव होता है, उनके ही जीवन में यह बदलाव आ सकता है, सवाल पैदा करने वाले जिंदगी भर सवाल ही करते रहते हैं.

१. शैलपुत्री माता

शक्ति: स्थिरता और आत्मविश्वास की शक्ति

वरदान: भक्त को जीवन में दृढ़ता, धैर्य और अटूट विश्वास प्रदान करती हैं।

२. ब्रह्मचारिणी माता

शक्ति: तपस्या और संयम की शक्ति

वरदान: कठिनाइयों को सहने की शक्ति, दृढ़ निश्चय और ज्ञान की प्राप्ति होती है।

३. चंद्रघंटा माता

शक्ति: साहस और निर्भयता की शक्ति

वरदान: भक्त के जीवन से भय और नकारात्मक ऊर्जा दूर करती हैं, विजय दिलाती हैं।

४. कूष्मांडा माता

शक्ति: सृष्टि और ऊर्जा की शक्ति

वरदान: ब्रह्मांड में प्रकाश और ऊर्जा का संचार करती हैं, जीवन में स्वास्थ्य और प्रगति लाती हैं।

५. स्कंदमाता

शक्ति: मातृत्व और करुणा की शक्ति

वरदान: संतान सुख, शांति और प्रेम का आशीर्वाद देती हैं।

६. कात्यायनी माता

शक्ति: विजय और धर्म रक्षा की शक्ति

वरदान: शत्रु पर विजय, धर्म की रक्षा और न्याय की स्थापना करती हैं।

७. कालरात्रि माता

शक्ति: अंधकार और बुराई का विनाश

वरदान: भय, जादू-टोना और शत्रुओं से मुक्ति दिलाती हैं, साहस प्रदान करती हैं।

८. महागौरी माता

शक्ति: पवित्रता और शांति की शक्ति

वरदान: मन और जीवन को शुद्ध करती हैं, सौंदर्य, समृद्धि और सुख-शांति प्रदान करती हैं।

९. सिद्धिदात्री माता

शक्ति: सिद्धि और आध्यात्मिक शक्ति

वरदान: सभी सिद्धियाँ प्रदान करती हैं, मोक्ष और परम ज्ञान की प्राप्ति कराती हैं.

माता रानी की ९ शक्तियां

आदिशक्ति की आराधना के पर्व के रूप में नवरात्रि उत्सव मनाया जाता ९ दिन, नवरात्रि में मां की आराधना की जाती है. हर दिन में मां के किस रूप का भक्ति दर्शन करते हैं और इसका क्या फल मिलता है, इसका भी अपना महत्व है. मां के नौ रूप जीवन में धैर्य, तपस्या, साहस, ऊर्जा, करुणा, विजय, सुरक्षा, शांति और सिद्धि की नौ शक्तियाँ प्रदान करते हैं. जिस महिला अथवा व्यक्ति के जीवन में यह ९ खूबियां आ जाती है वह व्यक्ति जीवन में कभी पीछे नहीं है सकता है. नवरात्रि का पर्व हम सभी को यही संदेश देता है.

– राजेश दुबे, हिमाचल प्रदेश.

भक्ति की शक्ति से बढ़ता है आत्मबल

कालिका देवी संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष अजय मोरय्या, जयश्री मोरयय्या का मत

जीवन में इंसानी सीमा जहां खत्म होती है वहीं से परमात्मा की सीमा की शुरुआत होती है. इसका अनुभव मुझे जीवन में कई बार आया हुआ है. मां महाकाली का यह मंदिर जहां जागरुक है वहीं अभी तक हजारों भक्तों ने इसका अनुभव लिया है. यहां पर दिल से मांगी गई दुआ कबूल होती है और असंभव भी संभव हो जाता है. सबनीस प्लॉट का यह मंदिर न केवल शहर बल्कि समूचे विदर्भ में माता रानी के भक्तों के आकर्षण का केंद्र बनेगा.

जीवन में लक्ष्य लेकर चलने वाले और इसे तय करते हुए उसे सफल करने के लिए पहले से ही जज्बाती रहे अजय मोरय्या के मुताबिक उनके जीवन में पत्नी जयश्री का सदा साथ रहा और उनके हर कार्य में कंधे से कंधा मिलाकर न केवल साथ दिया बल्कि नेक कामों के लिए सदा प्रोत्साहित करने का कार्य किया है.भक्ति की शक्ति असीमित और अद्वितीय होती है.जब मनुष्य सच्चे भाव से ईश्वर की भक्ति करता है, तो उसकी आत्मा को शांति, मन को स्थिरता और जीवन को सही दिशा मिलती है. ऐसा व्यक्ति जीवन में ऐसे कई कार्य करता है, जो बाकी लोगों के लिए संभव होती है. वह कहते हैं कि भक्ति केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं रहती, यह तो एक आस्था है, एक विश्वास है जो कठिन से कठिन परिस्थिति में भी मनुष्य को अडिग बनाए रखती है.भक्ति से मनुष्य के भीतर धैर्य, साहस और करुणा का संचार होता है. भक्त अपने आराध्य से जुड़कर जीवन की हर कठिनाई को सहजता से सहन कर लेता है. भक्ति वह शक्ति है जो साधारण व्यक्ति को भी महान बना देती है और असंभव को संभव कर देती है. अपने जीवन में भक्ति की शक्ति का कई बार अनुभव करने की बात भी उन्होंने कही.जिस प्रकार पत्थर पर बहती हुई जलधारा उसे समय के साथ गढ़ देती है, उसी प्रकार भक्ति जीवन को दिव्यता से परिपूर्ण कर देती है.यह आत्मा को परमात्मा से जोड़ने वाला सेतु है.इसलिए कहा जाता है भक्ति की शक्ति अपार है, यह जीवन को दिव्यता और आत्मबल से भर देती है. शतचंडी महायज्ञ के साथ नवरात्रि उत्सव अभूतपूर्व तरीके से शुरू है. भक्तों से महाकाली मां का दर्शन कर अपना जीवन धन्य करने और सभी कार्यक्रमों का लाभ लेने का अनुरोध अजय-जयश्री मोरय्या ने किया.

महिला शक्ति का प्रतीक पर्व है नवरात्र

भाजपा नेत्री नवनीत राणा का प्रतिपादन

अमरावती- नवरात्रि उत्सव केवल पर्व नहीं बल्कि महिलाओं की महत्ता बताने वाले और अपार संभावना की क्षमता का परिचायक त्यौहार है. महिलाओं में अपार शक्ति है, उन्हें केवल इसे समझने की जरूरत है. महिलाओं को स्वयं को पहचानते हुए आर्थिक मजबूती के साथ ही उन्हें अपनी काबिलियत को मौके के रूप में विकसित कर स्वयं का स्थान बनाना चाहिए, इस आशय का मत भाजपा की राष्ट्रीय नेत्री पूर्व सांसद नवनीत राणा ने व्यक्त किया. उनके मुताबिक नवरात्रि का पर्व भारतीय संस्कृति में महिला शक्ति, साहस और धैर्य का प्रतीक माना जाता है. इस पावन अवसर पर देवी दुर्गा के नौ स्वरूपों की आराधना की जाती है. प्रत्येक स्वरूप जीवन में शक्ति, समर्पण, ज्ञान, करुणा और न्याय जैसे मूल्यों को स्थापित करने का संदेश देता है. यह पर्व केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह नारी शक्ति के सम्मान, उसकी भूमिका और समाज में उसके योगदान का स्मरण कराने वाला अवसर है. नवरात्र में स्त्री को आदिशक्ति के रूप में पूजने की परंपरा, स्त्रियों की वास्तविक सामर्थ्य और सम्मान का प्रतीक है. आज के दौर में भी नवरात्र का संदेश उतना ही प्रासंगिक है. यह पर्व हमें याद दिलाता है कि जब-जब अन्याय, अत्याचार और नकारात्मकता बढ़ी है, तब-तब स्त्री शक्ति ने उसका विनाश कर न्याय और सद्भावना की स्थापना की है. इसलिए नवरात्रि केवल पूजा-पाठ का ही पर्व नहीं, बल्कि यह नारी की असीम शक्ति और प्रेरणा का प्रतीक पर्व रहने की बात पूर्व सांसद नवनीत राणा ने कही. नवरात्रि पर उन्होंने सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं दी. जिले के सर्वांगीण विकास के साथ ही राज्य तथा राष्ट्र की मजबूती,आर्थिक निर्भरता की कामना मां दुर्गा के चरणों में की.